International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052 (UIF)
Volume - 4 | Issue - 11 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में धर्म और विज्ञान का तादात्म्य

चन्दन सिंह
जे.आर.पी.,एस.पी.पी.ई.एल.परियोजना
भारतीय भाषा संस्थान, मानसगंगोत्री, मैसूर , (कर्नाटक)

Short Profile :
Chandan Singh is R . P. , S . P. P. E . El . Project Institute of Indian Languages at manasagangotri , Mysore (Karnataka)

सारांश

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत स्वामी विवेकानन्द धर्म को मानव जीवन का अनिवार्य पक्ष मानते थे। उनका मत था कि धार्मिक चेतना, जो एक विशिष्ट प्रकार की आंतरिक अनुभूति होती है तथा जिसमें दैविक व अतिप्राकृतिक अंश की अनिवार्य विद्यमानता विद्यमानता होती है, की अभिव्यक्ति धर्म के स्वरूप को स्पष्ट करती है। वस्तुतः धर्म इन्द्रियों व बौद्धिक विवेचनाओं से परे उठने का संघर्ष है। अतः स्पष्ट है कि धर्म अमूर्त तत्वों पर विचार करता है, जबकि विज्ञान का संबंध भौतिक जगत् से होता है। किंतु विवेकानन्द धर्म और विज्ञान में केवल पद्धति का भेद मानते थे और दोनों में सामंजस्य स्थापित करने पर बल देते थे। वस्तुतः जिन अनुभवों तक विज्ञान की पहुँच होती है धर्म उसका अनुसंधान करके ज्ञान सुलभ कराता है। विज्ञान जीवन में स्वतंत्र चिंतन, परिष्कृत विचार उत्पन्न करता है और धर्म जीवन में शुद्धता, प्रेम और त्याग की भावना उत्पन्न करता है। अतः दोनों पृथक नहीं वरन् परस्पराश्रित हैं

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

प्रस्तावना :

अपने तेज और ओजस्वी वाणी के जरिए संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का पताका फहराने वाले भारतीय नवजागरण के अग्रदूत स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 ई. को कलकत्ता के एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। सत्य को जानने की उनकी उत्कट अभिलाषा बाल्यकाल से ही थी। तत्व दर्शन, विज्ञान और धर्म के विषय में उनकी विशेष रुचि थी। उनके चिंतन तथा व्यवहार के मूल में वेदांत की शिक्षाएँ थीं। वे दर्शन और धर्म के क्षेत्र में रूढ़िवादी धार्मिक सिद्धांतों, अंधविश्वासों और सांप्रदायिक भेदभाव को मिटाना चाहते थे तथा बुद्धिवाद को प्रतिष्ठित करना करना चाहते थे। धर्म से उनका तात्पर्य मात्र पूजा पद्धति ही नहीं था, अपितु धर्म के विषय में उनकी मान्यता थी की यह जीवन दृष्टि है, जीवन जीने की कला है। उनके अनुसार धर्म की कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती, किंतु वे यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करते थे कि धर्म मानव जीवन का अनिवार्य पक्ष है तथा धर्म को समझने के लिए 'धार्मिकता' को समझना आवश्यक है। 'धार्मिकता' का अर्थ है 'धार्मिक चेतना'। 'धार्मिक चेतना' एक विशिष्ट प्रकार की आंतरिक अनुभूति है और इस अनुभूति की अभिव्यक्ति धर्म का स्वरूप स्पष्ट करती है। यह 'धार्मिक चेतना' सार्वभौम है और सभी व्यक्तियों में विद्यमान है क्योंकि धर्म सभी व्यक्तियों का अनिवार्य अंग है।

धार्मिकता की एक विशिष्टता होती है। उसमें दैविक व अतिप्राकृतिक अंश की अनिवार्य विद्यमानता होती है जो इसे अन्य बौद्धिक चेतनाओं से पृथक करती है। इस दैविक या अतिप्राकृतिक अंश का स्वरूप कुछ भी हो सकता है। वह व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर या निरपेक्ष सत् या कुछ अन्य भी हो सकता है। धर्म ऐसे ही किसी विषय की ओर चेतना को उन्मुख करता है। अतः धर्म इन्द्रियों की सीमाओं से परे उठने का संघर्ष है। साथ ही इसका लक्ष्य बौद्धिक विवेचनाओं से भी उपर उठना है। अतः धर्म का अर्थ आध्यत्मिकता को जाग्रत करना है। धार्मिक चेतना अंततः ऐसे तथ्यों को प्रकट करती है जिसके विषय में इन्द्रिय संवेदनाओं तथा शुद्ध बौद्धिकता का आभास नहीं मिल पाता। यही वह स्थान है जहाँ धर्म और विज्ञान अलग-अलग मार्ग पर जाते हुए दिखायी देते हैं क्योंकि धार्मिक तत्व 'अमूर्त' होते हैं, 'भावमूलक' होते हैं जिनका अन्वेषण या प्रकटीकरण विज्ञान में नहीं होता है। अपितु विज्ञान तो 'मूर्त' विषयों का अन्वेषण करता है जो बार-बार निरीक्षित किए जा सकते हैं, जिनके संबंध में नियम स्थिर किए जा सकते हैं और इन नियमों के आधार पर विज्ञान के तथ्यात्मक मूल्यों को सत्य या असत्य कहा जाता है जबकि धर्म का संबंध परम् सत् एवं परमेश्वर में

निहित मूल्यों के साथ है जो न तो सत्य होते हैं और न असत्य। वे केवल स्वानुभूति के विषय होते हैं। ये सत्-असत् से परे होते हैं।

धर्म और विज्ञान के इसी वाह्य स्वरूप की भिन्नता के कारण जनसामान्य में यह धारणा व्याप्त व्याप्त है कि धर्म और विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों में मौलिक अन्तर हैं। एक को प्रत्यक्षवादी और दूसरे को परोक्षवादी कहा कहा जाता है। यह सर्वस्वीकृत मान्यता है कि विज्ञान प्रमाणिकता की कसौटी पर कसने के बाद ही किसी तथ्य को स्वीकार करता है, उसे सिद्धांत रूप में मान्यता प्रदान करता है। इसके ठीक विपरीत धर्म को जनसामान्य श्रद्धा और विश्वास पर आधारित मानता है, जिसमें जिसमें तर्क, प्रमाण, परीक्षण, प्रयोग आदि की कोई आवश्यकता नहीं होती तथा सदियों से चली आ रही परंपराएँ और मान्यताएँ ही इसके नियम और सिद्धांत होते हैं।

धर्म और विज्ञान के संबंध में जनसामान्य में व्याप्त इस वैषम्य के बावजूद विवेकानन्द धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित करने पर बल देते हैं। क्योंकि धर्म और विज्ञान के तत्वदर्शन को न समझने के कारण ही जनसामान्य में यह भ्रांत अवधारणा व्याप्त हुई है। यह अवधारणा उथले चिंतन का परिणाम है, व्याख्याकारों के स्वार्थ का खेल है। सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि धर्म और विज्ञान दोनों ही ऐसे तथ्यों पर आधारित हैं जिनमें वैषम्य नहीं साम्य है। वस्तुतः विज्ञान धर्म भी है और धर्म विज्ञान भी है, दोनों में कहीं कोई विरोध नहीं है, अतः दोनों के सहगामी होने में कोई तार्किक विसंगति नजर नहीं आती।

प्रश्न उठता है कि क्या धर्म को भी स्वयं को प्रमाणिकता की कसौटी पर कसकर अपने को सत्य प्रमाणित करना होगा, जिसकी सहायता से अन्य सभी विज्ञान अपने को सत्य सिद्ध करते हैं? पुनः, प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में जिन अनुसंधान पद्धतियों अर्थात् निरीक्षण प्रयोग, परीक्षण आदि का प्रयोग किया जाता है, क्या धर्म-विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्हें प्रयुक्त किया जा सकता है? इन प्रश्नों प्रश्नों के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि ऐसा अवश्य होना चाहिए। उनका कहना था कि जो धर्म वैज्ञानिकता को नकारता है, तर्क, तथ्य एवं प्रमाणों से घबराता है, उसका नष्ट हो जाना ही उचित हैं। ऐसे धर्म का लोप होना एक सर्वश्रेष्ठ घटना होगी। इस अनुसंधान के फलस्वरूप धर्म के जो शाश्वत तत्व प्रकट होंगे वह उतने ही वैज्ञानिक होंगे जितने कि भौतिकी या रसायनशास्त्र की उपलब्धियाँ।

वस्तुतः विज्ञान, धर्म के तत्वदर्शन को नकारता नहीं हैं, न ही धर्म के मूलभूत सिद्धांत विज्ञान के विरोधी हैं। सच तो यह है कि, धर्म के बिना विज्ञान अधूरा है और विज्ञान के बिना धर्म भी अधूरा

ही है। धर्म और विज्ञान एक-दूसरे से जुड़कर, एक-दूसरे के पूरक बनकर ही पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं। हैं। विवेकानन्द के अनुसार भारतीय दार्शनिक चिंतन परंपरा में इस प्रकार की सामंजस्य प्रक्रिया केवल वेदांत दर्शन में ही दिखाई पड़ती हैं। उनके अनुसार भारतीय दर्शन में शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत विज्ञान का चरम सिद्धांत है। उन्होंने घोषणा की कि सिर्फ अद्वैत वेदांत के आधार पर ही विज्ञान और और धर्म साथ-साथ चल सकते हैं, क्योंकि इसके मूल में अवैयक्तिक ईश्वर की आधारभूत धारणा, सीमा के अंदर निहित अनंत और ब्रह्मांड में उपस्थित सभी वस्तुओं के पारस्परिक मौलिक संबंध की दृष्टि है। वेदांत दर्शन के अनुयायियों को सचेत करते हुए उन्होंने कहा है कि वेदांत के चिन्तकों को विज्ञान का स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उनके लिए ऋषियों ने अभय का सूत्र दे रखा है। वेदांत का ब्रह्म सर्वव्याप्त हैं। प्रकृति के कण-कण में, साथ ही आस्तिकों, नास्तिकों, वैज्ञानिकों, सभी सभी के हृदय में समान रूप से उसकी उपस्थिति है।

स्वामी विवेकानन्द ने न केवल वैज्ञानिक सोच तथा तर्क पर ही बल दिया, अपितु धर्म को लोगों की सेवा और सामाजिक परिवर्तन से भी जोड़ा। विवेकानन्द की धर्म चेतना केवल व्यक्ति के निजी कल्याण तक सीमित नहीं है। उनकी धर्म चेतना सामाजिक सरोकारों के प्रति सजग भी है और सचेष्ट भी। उनका मत था कि धर्म किसी एकांत स्थल में बैठकर केवल चिंतन-मनन और भजन करने करने का माध्यम नहीं है अपितु इसका लाभ देश और समाज को भी मिलना चाहिए। धर्म को मानव की भौतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना चाहिए क्योंकि भूखा, नंगा और दरिद्र मनुष्य न तो भगवान का ध्यान कर सकता है और न ही भगवत्-साक्षात्कार कर सकता है। उसका आत्मभाव शरीर से उपर नहीं उठ सकता है। इसी कारण उन्होंने मानसिक सबलता पर जोर दिया और पाश्चात्य देशों में सैद्धांतिक वेदांत तथा भारतवर्ष में व्यावहारिक वेदांत की शिक्षा दी, क्योंकि उनका मानना था कि भारत यदि गरीब है तो केवल भौतिक उपलब्धियों के क्षेत्र में। अतः भारत की गरीब और पीड़ित जनता के उत्थान के लिए उन्होंने विज्ञान और तकनीक के इस्तेमाल पर बल दिया। इसी कारण उनका मानना था कि पूर्व और पश्चिम के बीच अध्यात्म और भौतिक प्रगति का आदान-प्रदान होना चाहिए। उन्होंने पूर्व तथा पश्चिम, प्राचीन तथा आधुनिक, धर्म तथा विज्ञान, भौतिकता तथा अध्यात्म के बीच सेतु स्थापित किया।

विवेकानन्द विज्ञान और धर्म में केवल पद्धति का भेद मानते थे तथा धर्म को भी एक विज्ञान समझते थे। क्योंकि, यद्यपि धर्म और विज्ञान का कार्य क्षेत्र भिन्न अवश्य है परंतु उद्देश्य दोनों के समान हैं। दोनों ही सत्यान्वेषण की प्रक्रिया में अलग-अलग मार्गों से प्रगतिशील हैं। जिस प्रकार धर्म नैतिक एवं तात्विक जीवन के आंतरिक नियमों का अन्वेषण करता है, मनुष्य के अंदर छिपी शक्तियों

शक्तियों और सत्प्रवृत्तियों को मनोवैज्ञानिक पद्धति के द्वारा अभिव्यक्त करता है, प्रकट करता है, उसी उसी प्रकार प्राकृतिक विज्ञान भौतिक जगत् के नियमों का अनुसंधान करता है प्रकृति तथा पदार्थ में छिपी शक्तियों की जानकारी प्राप्त करता है। दोनों ही अपने ढंग से मानव जगत् के मोक्ष का द्वार प्रशस्त करते हैं। एक दृष्टिकोण से सभी ज्ञान धर्म है और दूसरी दृष्टि से सभी ज्ञान विज्ञान है। दोनों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। विज्ञान का उद्देश्य है कि प्रकृति के उपर मानव का आधिपत्य स्थापित हो जाए और उपभोग की अनेक सामग्रियों को रचकर मानव जीवन को सुखमय बनाएँ। विज्ञान विस्तार के साथ कल्पना की बागडोर लंबी होकर दूर-दूर तक पहुँच जाती है और विचार को धक्का देकर कल्पना नए-नए आयामों की सृष्टि करती है। परंतु मानव को अपनी पाशविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार मानव प्राकृतिक घटनाओं का नियंत्रण करता है। अभी तक धर्म को छोड़कर अन्य कोई सांस्कृतिक व्यवस्था ऐसी नहीं हुई है जिसके आधार पर मानव अपनी पाशविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर सकता है। वस्तुतः धर्म का विषय नई ज्योति है, है, बोधि है जिसके हो जाने पर मानव में उसकी पाशविकता में अनुशासन चला आता है।

वस्तुतः धर्म और विज्ञान में कोई भेद है ही नहीं। यद्यपि कार्य क्षेत्र की भिन्नता की दृष्टि से दोनों के स्वरूप में अंतर दिखायी देता है किंतु दोनों एक ही महाप्रयोजन की पूर्ति में संलग्न हैं। वे एक-दूसरे के विरोधी नहीं वरन् पूरक हैं। धर्म चेतन जगत् तो विज्ञान जड़ जगत् के रहस्यों का उद्घाटन करता है। धर्म और विज्ञान दोनों एक ही महासत्य अर्थात् जगत् के मूल तत्वको दो दिशाओं दिशाओं से खोजना आरम्भ करते हैं और जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं वैसे-वैसे एक-दूसरे के अधिकाधिक निकट पहुँचते हैं। जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने भी स्पष्ट किया था कि, विज्ञान कुछ नहीं अपितु एकता ढूँढ रहा हैं। उसका उद्देश ही वाह्य दृश्यमान विविधता के मध्य विद्यमान एकत्व की खोज करना करना है। एकता की उपलब्धि होते ही विज्ञान अध्यात्म में मिल जायेगा। क्योंकि यही इसका ध्येय हैं। रसायन विज्ञान की चरम परिणति मूल तत्व की खोज में हैं जिससे सभी पदार्थों के रहस्य का पता चल सके। इस मूलतत्व से ही सारे तत्व अभिव्यक्त हुए हैं। इसी प्रकार भौतिक शास्त्र की पूर्णता, पूर्णता, पदार्थ नहीं सर्वव्याप्त ऊर्जा की खोज में होगी। विज्ञान का यह विकास रूपी प्रवाह अपनी चरम चरम अवस्था में आने पर अध्यात्म के सागर में लीन हो जायेगा। धर्म और विज्ञान का स्वरूपगत भेद समाप्त हो जाएगा और तब दोनों दो नहीं एक ही होंगे। यह आध्यात्मिक लगनेवाली बात पूर्णतः वैज्ञानिक है। यह भारतीय वैज्ञानिक जीवन दृष्टि है। इसी का प्रयोग जितना भौतिक विज्ञान में हुआ उतना ही धर्म में हुआ। अतः भारत का धर्म वैज्ञानिक है और विज्ञान धार्मिक। इनमें आपस में कोई विरोधाभास नहीं है। भारत के विकास में धर्म की भूमिका का एक सटीक उदाहरण पोलियो उन्मूलन

अभियान के दौरान देखने को तब मिला जब कुछ इलाकों में अफवाह के चलते लोगों ने अपने बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाने से मना कर दिया। ऐसे में प्रशासन ने धर्मगुरुओं की मदद ली। धर्मगुरुओं की अपील का बेहतर असर देखने को मिला।

स्पष्ट है कि विज्ञान एवं अध्यात्म का यह समन्वय, सहयोग समूची मानव जाति को भौतिक समृद्धि तथा आत्मिक प्रगति प्रदान करने वाला सिद्ध हो सकेगा। यह एक प्रकार का ऐसा समुद्र मंथन होगा जिसकी उपलब्धियाँ मानव जाति को गौरवान्वित करेंगी, ऐसे अजस्र अनुदान भी प्रदान करेंगी जिससे मानव कृतकृत्य हो सके।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि मनुष्य का भविष्य उसके सही अर्थों में वैज्ञानिक और सच्चे आध्यात्मिक होने पर टिका है। विज्ञान को जहाँ धर्म से मानवीयता की सीख लेने की जरूरत है, वहीं धर्म के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग की आवश्यकता है। वस्तुतः जीवन आत्मिक और भौतिक दोनों तत्वों से मिलकर बना है, इसलिए विज्ञान व अध्यात्म अलग– अलग होते हुए भी पूरक हैं।

मानव के समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति वाह्य जगत् के द्वारा हो जाती है और जब तक मानवीय आवश्यकताएँ इस भौतिक सृष्टि की संकुचित सीमा के भीतर की वस्तुओं तक ही परिमित रहती हैं, तब तक उसे ईश्वर की कोई जरूरत नहीं पड़ती। परंतु जब वह भौतिक भोग-विलास से तृप्त होकर ऊब जाता है, तब उसकी दृष्टि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस सृष्टि से परे परे जाती है, उसे ईश्वर की आकांक्षा होती है। जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "जहाँ विज्ञान की सीमा समाप्त होती है, वहीं से अध्यात्म आरम्भ होता है"। शायद यह विज्ञान का धर्म और और अध्यात्म के पीछे छुपे रहस्यों को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की सीमा को तो इंगित करता ही है, साथ ही इन रहस्यों की खोज के प्रयास की सतत भावना की भी।

किंतु यदि आज के संदर्भ में धर्म एवं विज्ञान के पारस्परिक संबंधों का अवलोकन किया जाए तो यह परिलक्षित होता है कि अभी तक मानव, विज्ञान के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति करता आया है, परंतु जनकल्याण में वैज्ञानिक अनुसंधान का अधिकाधिक सदुपयोग हो, ऐसी भावना का लोप होता जा रहा है। विज्ञान का प्रयोग जनकल्याण के साथ-साथ उसके विनाश के लिए भी होने लगा है। विज्ञान के जरिए उसने जो भी विकास हासिल किया, वह कोरा भौतिक विकास रहा। आध्यात्मिकता के अभाव में विज्ञान के सहारे की गई भौतिक उन्नति एकांगी और कभी-कभी विध्वंसक सिद्ध हुई। परमाणु बम इसका उदाहरण है। मानव कल्याण के लिए निर्मित विज्ञान का यह विनाशकारी रूप देखने के बाद उसकी भौतिकता को नैतिक अनुष्ठान की जरूरत महसूस की गई। इस

पर नैतिक नियंत्रण होना चाहिए। क्योंकि, मनुष्य को इस जीवन में भौतिक सुखों की अनुभूति भी रहनी चाहिए और आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील भी, इसलिए दोनों का समन्वय आवश्यक हो जाता है। प्रश्न उठता है कि जहाँ एक तरफ विज्ञान के विकास की चकाचौंध है वहीं दूसरी तरफ धर्म का टिमटिमाता हुआ चिराग, क्या विज्ञान इसे बुझा देगा या धर्म के सहयोग से विज्ञान मानव जीवन को सुखमय बनायेगा? यह इस युग की चुनौती है।

संदर्भ सूची :-

हिंदी :-

1. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद : धर्म-दर्शन की रूप-रेखा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2009।
2. सिंह, शिवभानु : धर्म-दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. मसीह, याकूब : सामान्य धर्मदर्शन एवं दार्शनिक विश्लेषण, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2001।
4. रमेन्द्र : धर्म-दर्शन (सामान्य एवं तुलनात्मक), मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2006।
   a सिन्हा, लक्ष्मी : धर्म दर्शन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, चन्द्रावल रोड, जवाहर नगर, दिल्ली, 1999।
5. स्वामी विवेकानन्द : धर्मतत्व, रामकृष्ण मठ, 2000।

अंग्रेजी :-

6. Swami Vivekananda : **Essentials of Hinduism,** Advaita Ashrama (Publication Department) 5 Dehi Entally Road, Kolkata, 2010.
7. Swami Tejasananda : **A Short Life of Swami Vivekananda**, Advaita Ashrama (Publication Department) 5 Dehi Entally Road, Kolkata, 2011.
8. Swami Nikhilananda : **Vivekanand : A Biography**, Advaita Ashrama (Publication Department) 5 Dehi Entally Road, Kolkata, 2011.
9. Swami Nirvedananda : **Hinduism At A Glance**, Ramkrishna Mission, Calcutta Students' Home, Belgharia, Kolkata, 2011.
10. John H. Hick : **Philosophy of Religion**, Prentice-Hall, 1963.

वेब लिंक :-

11. http://sheetanshukumarsahaykaamrit.blogspot.in/2013/04/blog-post_8902.html

12. http://blog.scientificworld.in/2009/06/blog-post_15.html

13. http://hindi.webdunia.com/swami-vivekananda-special/vivekananda-in-hindi-113010900066_1.html

14. http://www.jagran.com/spiritual/sant-saadhak-the-relationship-of-science-and-spirituality-11624675.html

15. http://blog.scientificworld.in/2009/06/blog-post_15.html

16. http://hindi.speakingtree.in/spiritual-blogs/seekers/science-of-spirituality/content-358689

17. https://uttarapath.wordpress.com/2013/06/01/

18. http://www.jagran.com/editorial/apnibaat-opinion-9752018.html

19. http://navbharattimes.indiatimes.com/astro/holy-discourse/religious-discourse/-/articleshow/1095417.cms

20. http://hindi.awgp.org/gayatri/sanskritik_dharohar/vaigyanik_adhyatmvad/vigya_addhyatma/dharma_vigyan_viprit_pripurak